लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक

# हज्ज व उमराः

## और ज़ियारत के आदाब

अब्दुल मन्नान सलफी

प्रकाशक

जमिअत अहले हदीस

सिद्धार्थ नगर यू.पी.

सुन्नते नबवी के मुताबिक़
संक्षिप्त में

# हज्ज, उमरः एवं ज़ियारत के आदाब

लेखक
**अब्दुल मन्नान सलफी**
जामिया सिराजुल उलूम अस्सलफिय्या
झण्डानगर, कपिलवस्तु, नेपाल

प्रकाशक
**जमिअत अहले हदीस**
सिद्धार्थ नगर यू.पी.

नाम पुस्तिका : हज्ज, उमरः एवं जि़यारत के आदाब

लेखक : अब्दुल मन्नान सलफी

पृष्ठ संख्या : 76

चतुर्थ प्रकाशन : अप्रैल 2025

संख्या :1000

प्रकाशक : जमिअत अहले हदीस सिद्धार्थ नगर यू.पी.

पुस्तिका मिलने का पताः

**जमिअत अहले हदीस**

**सिद्धार्थ नगर यू.पी.**

मो. नं0.9453117451, 9450550886

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله رب العالمين والصلوٰة والسلام على عبده ورسوله محمد واٰله وصحبه اجمعين، اما بعد!

हज्ज इस्लाम के पांच बुनियादी अरकान में से एक रुक्न है जो अक़्ल रखने वाले एवं बालिग़ ऐसे मुसलमान पर पूरी ज़िन्दगी में एक बार फ़र्ज़ है जो अल्लाह के घर तक जाने की ताक़त रखते हों।

दूसरी इबादात के मुक़ाबले ज़्यादा तर मुसलमानों को हज्ज की सआ़दत ज़िन्दगी में एक या दो बार ही मिल पाती है इसलिए

हज्ज करने में अन्हें कठिनाई होती है और वह सुन्नत के मुताबिक़ हज्ज अदा नहीं कर पाते हैं । तरीक़-ए-हज्ज से सम्बिन्धित बहुत सी किताबें तफ़सील से लिखी गई हैं जिनमें हज्ज के अहकाम व मसाइल दलाएल के साथ बयान हुए हैं, ऐसी किताबें इल्मी एतेबार से क़ाबिले क़दर हैं मगर उन से आ़म हाजी और कम पढ़े लिखे लोगों के लिए फ़ायदा उठा पाना मुश्किल है, इसलिए कुछ दोस्तों के कहने पर कम पढ़े लिखे हाजियों की रिआ़यत करते हुए संक्षिप्त में **2009** में यह पुस्तिका उर्दू भाषा में लिखी गई थी, इस साल इसे हिन्दी भाषा में प्रकाशित किया जा रहा है । अल्लाह तआ़ला इस पुस्तिका द्वारा हाजियों को फ़ायदा

पहुंचाये । (आमीन)

हज्ज, उमरः व मस्जिद-ए-नबवी की ज़ियारत से सम्बंधित सारे मसाइल कुरआन मजीद और सही अहादीस की रोशनी में लिखे गए हैं, लेकिन संक्षिप्त में होने के कारण हर जगह हवाला ज़िक्र नहीं किया गया है । इस किताब के आख़िर में कुरआन व हदीस की कुछ दुआयें अ़रबी तथा हिन्दी में लिख दी गई हैं ताकि हाजी साहेबान उन्हें याद कर के या इस किताब में देख कर पढ़ते रहें, अल्लाह तआ़ला इस किताब से तमाम मुसलमानों को फ़ायदा पहुंचाये । (आमीन)

अब्दुल मन्नान सलफ़ी

20 अगस्त 2010 ई.

# हज्ज व उमरः से पहले

उमरः व हज्ज का मुख़्तसर तरीक़ा ज़िक्र करने से पहले हज्ज व उमराः का इरादा करने वाले खुशनसीबों के लिए कुछ अहम बातों की निशानदही की जा रही है जिनका लिहाज़ करना ज़रूरी हैः

(१) हज्ज व उमरः का इरादा करने वालों को अपनी नीय्यत ख़ालिस रखनी चाहिए, और अल्लाह की रज़ा के इलावा और कोई मक़्सद या दिखावा हरगिज़ नहीं होना चाहिये । हज्ज पर जाते वक़्त जुलूस व नारा बाज़ी से खुलूस के बजाये सिर्फ़ दिखावा का इज़हार होता है इसलिए इन से बचें।

(२) हज्ज पर जाने से पहले भरोसेमंद

उलमा और किताबों की मदद से हज्ज व उमरः का इरादा करने वालों को हज्ज व उमरः के अहकाम व मसाइल सीख लेना चाहिये ताकि हज्ज व उमरः सुन्नत के मुताबिक़ अदा कर सकें।

(३) हज्ज व उमरः के लिए हलाल व पाक माल ख़र्च करें नहीं तो हज्ज व उमरः क़बूल नहीं होंगे ।

(४) सफरे हज्ज के लिए नेक, सज्जन और पढ़े लिखे साथियों को चुना जाये ताकि उनके इल्म और तक़्वा से फ़ायदा उठा सकें ।

(५) हज्ज व उमरः के सफ़र के लिए उचित ख़र्च का इन्तेज़ाम कर लें ताकि सफ़र में किसी से मांगने की ज़रूरत न पड़े ।

(६) सफ़र से पहले तमाम गुनाहों से ख़ालिस तौबा और इन्सानों से सम्बंधित हुकूक़ की अदायगी या मआ़फ़ी बेहद ज़रूरी है, इसका ख़ास ख़्याल रखें ।

(७) हज्ज व उमरः का इरादा करने वाले अगर अपने घर वालों को कोई वसीय्यत करना चाहें तो उन्हें लिखित रूप में वसीय्यत कर देना चाहिये कुछ न सही तो अपने बच्चों को दीन पर क़ायम रहने और उन्हें अल्लाह से डरने की वसीय्यत ज़रूर कर देनी चाहिये।

(८) अपने बाल बच्चों, सगे सम्बिंधियों से विदा होते हुए उनसे अपने लिए दुआ़ की दरख़्वास्त करें, और खुद यह दुआ़ पढ़ें:

"اَسْتَوْدِعُكُمُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا تَضِيْعُ وَدَائِعَهٗ"

**(अस्तौदिअ़ो कुमुल्लाहा अल्लज़ी ला तज़ीअ़ो व दाएअहू )**

(९) घर से निकलते वक़्त यह दुआ़ पढ़ें:

"بِسْمِ اللّٰهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ، لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ"

**(बिस्मिल्लाहि, तवक्कलतो अ़लल्लाहि लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह)**

(१०) सफ़र में किसी भी सवारी पर सवार होते वक़्त بسم الله (बिस्मिल्लाह) कहें और जब सवारी पर बैठ जायें तो तीन बार

الحمدلله (अल्हम्दुलिल्लाह) और तीन बार الله اكبر (अल्लाहु अक्बर) कहें और फिर कुरआन और सुन्नत की यह दुआयें पढ़ें:

☆ ﴿سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَ اِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ﴾

☆ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْأَلُکَ فِیْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَ التَّقْوٰی وَ مِنَ الْعَمَلِ مَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰی. اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَیْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ. اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالْخَلِیْفَةُ فِی الْاَهْلِ. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَ سُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ و الْاَهْلِ"

**(सुबहानल्लज़ी सख़ख़रा लना हाज़ा वमा कुन्नालहू मुक़रिनीन व इन्ना**

**इला रब्बिना लमुनक़लिबून)**

**(अल्लाहुम्मा इन्ना नसअलुका फ़ी सफ़रिना हाज़लबिर्रा वत्तक़्वा व मिनल अ़मलि मा तुहिब्बू व तरज़ा, अल्लाहुम्मा हव्विन अ़लैना सफ़रना हाज़ा वतवि अ़न्ना बोअ़दहु, अल्लाहुम्मा अनतस्सा-हिबु फ़िस्सफ़रि वल ख़लीफ़तो फ़िल - अहलि, अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ोबिका मिन वोअ़साइस्सफ़रि व कआबतिल मन्ज़रि व सूइल मुनक़लबि फ़िलमालि वल अहलि)**

(११) हाजी साहेबान पूरे हज्ज के सफ़र में दूसरों के साथ अच्छा ब्योहार करें, साथियों की हर सम्भव मदद और ख़िदमत

करें, किसी को अपनी बात व अ़मल से तकलीफ़ न पहुंचायें और अपनी ज़ुबान को ज़िक्र व दुआ़ से तर रखते हुए गुनाह की बातों और कामों से बचें।

(१२) हाजी साहेबान सफ़रे हज्ज को सैर सपाटा का सफ़र न समझें बल्कि उस पर विश्वास रखें कि यह इबादत का सफ़र है ।

(१३) पूरे सफ़रे हज्ज में जमाअ़त से पंजवक़्ता नमाज़ों का एहतेमाम करें और मक्का में ठहरने के समय मस्जिद-ए-हराम में और मदीना में ठहरने के वक़्त मस्जिद-ए-नबवी में सारी नमाज़ें अदा करने की कोशिश करें, मस्जिद-ए-हराम में एक

नमाज़ का सवाब एक लाख के बराबर और मस्जिद-ए-नबवी में एक नमाज़ का सवाब एक हजार नमाज़ के बराबर है ।

(१४) मक्का, मदीना और पवित्र स्थलों का सम्मान करें और इन जगहों पर ऐसी कोई हरकत बिल्कुल न करें जिस से उन्की हुरमत व पवित्रता को ठेस पहुंचे ।

# उमरः का मुख़्तसर तरीक़ा

## एहराम और उसके आदाब

(१) **एहराम बांधने से पूर्व** : हवाई जहाज़ से मक्का मुकर्रमा का सफ़र करने वाले आज़मीनेहज्ज हवाई जहाज़ पर सवार होने से पहले अच्छी तरह सफ़ाई सुथराई का एहतेमाम करें, अपने नाखुन काट लें, मूछों को छोटी करलें, बग़ल और नाभि के नीचे के बाल साफ़ करके गुस्ल करलें, तथा मर्द हज़रात अपने बदन पर खुशबू मल लें मगर सावधानी बरतें कि खुशबू एहराम की चादरों पर न लगने पाये, इस के बाद एहराम की एक चादर पहन लें और दूसरी ओढ़ लें, और महिलायें सफ़ाई सुथराई और गुस्ल से

फ़ारिग़ होकर अपना कोई भी लिबास एहराम के लिए पहन लें, लेकिन ध्यान रखें कि उन का लिबास न तो बहुत तंग हो और न भड़कीला, महिलायें गुस्ल के बाद खुशबू न लगायें, यह सभी उमरः के एहराम के लिए प्रारम्भिक कार्य हैं ।

## (२) उमराः की निय्यत

जहाज़ उड़ने के बाद जब जहाज़ कर्मी "मीक़ात" के सीध के क़रीब होने का एलान करें तो अल्लाह का नाम लेकर दिल में उमरः की नीय्यत करलें और ज़ुबान से "لَبَّيْكَ عُمْرَةً" (**लब्बैका उ़मरतन**)कहते हुए उमरः का एहराम बांध लें, मर्द उंची आवाज़ में तलबिया पुकारना शुरू करदें,

औरतें तलबिया धीरे धीरे पुकारेंगी, तलबिया के शब्द यह हैं:

"لَبَّیکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیکَ، لَبَّیکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیکَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ، لَا شَرِیْکَ لَکَ"

**(लब्बैका अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैका ला शरीका लका लब्बैक, इन्नल हम्दा, वन्निअ़मता लका वलमुलक, ला शरीका लक )**

अगर आप मदीना से अथवा किसी और जगह से सड़क द्वारा मक्का मुकर्रमा जा रहे हों तो मीक़ात पर पहुंचकर नहाने के बाद एहराम की चादरें पहन अथवा ओढ़ लें, दिल में उमरः की नीय्यत करने बाद

لَبَّيْكَ عُمْرَةً ( **लब्बैका उ़मरतन** ) कहते हुए एहराम बांध लें, और तलबिया पुकारना शुरू कर दें ।

## (३) एहराम की पाबन्दियां

अब आप ने सम्पूर्ण रूप से एहराम बांध लिया है इस के बाद मर्दों व औरतों दोनों के लिए एहराम की पाबन्दियां आवश्यक और एहराम की हालत में निम्नलिखित बातें इनके लिए हराम हो गईं।

☆बाल काटना, मुंडवाना या उखाड़ना।

☆ नाखुन काटना ।

☆ खुशबू लगाना ।

☆ मर्द का सर ढांपना ।

☆ मर्द के लिए सिले हुए कपड़े

पहनना ।

☆ ज़मीनी शिकार करना ।

☆ निकाह करना ।

☆ शारीरिक संबन्ध बनाना ।

☆ औरतों के लिए नक़ाब व दस्ताने का प्रयोग करना ।

**नोटः-** नक़ाब से वह ख़ास कपड़ा मुराद है जिसे औरतें पर्दा के मक़सद से पहनती हैं और जिससे उनका पूरा चेहरा छिप जाता है, इसका प्रयोग एहराम की हालत में मना है, लेकिन इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि औरत को एहराम की हालत में चेहरा खोलने की इजाज़त है, बल्कि औरत के लिए ज़रूरी है कि वह पर्दा का

एहतेमाम एहराम की हालत में भी करे, इसलिए मुनासिब यह है कि औरत नक़ाब भले न लगाए मगर अजनबी मर्दों से पर्दा के लिए चादर का प्रयोग ज़रूर करे और घूंघट निकाल कर अपने चेहरे पर लटकाए रहे, जैसा कि हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रजिअल्लाहु अन्हा की रिवायत से पता चलता है ।

एहराम की हालत में अंगूठी, घड़ी, बेल्ट, छतुरी और औरतों के लिए ज़ेवरात व चूड़ियां प्रयोग करने की इजाज़त है ।

**नोटः-** मक्का में अपने रहने की जगह पहुंचने के बाद नहा लें और ज़रूरत भर खा पी कर उमरः के लिए हरम शरीफ़ जाकर उमरः करें।

# (४) हरम शरीफ़ में दाख़िला और तवाफ़

वज़ू करके जिस भी दरवाज़े से हरम में दाख़िला आसान हो उस दरवाज़े से हरम शरीफ़ में दाख़िल हों, दाख़िल होते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِىْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ" **(बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्स-लामु अ़ला रसूलिल्लाह, अल्लाहुम्मफ़-तह ली अब्वाबा रहमतिका)** पढ़ते हुए दायां पैर मस्जिद में दाख़िल करें और तहीय्यतुल मस्जिद पढ़े बिना सीधे मताफ़ (ख़ान-ए-काबा के चारों ओर तवाफ़ करने

की जगह) में हजरे असवद के पास या उसके सामने पहुंचकर तवाफ़ की नीय्यत करें, अगर आसानी से हजरे असवद को चूमना मुम्किन हो तो بسم الله الله اكبر **(बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर)** कहते हुए उसे बोसा दें और भीड़ के कारण अगर चूमना कठिन हो तो हजरे असवद के सीधमें पहुंचकर بسم الله الله اكبر **(बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर** )कहकर हाथ से सिर्फ़ इशारा करें और तवाफ़ शुरू कर दें, (हाथ से इशारा के बाद हाथ चूमना सही नहीं है) ।

तवाफ़ करते समय ज़्यादा से ज़्यादा दुआ़ और इस्तेग़फ़ार करें, तवाफ़ करते हुए जब ''रुकने यमानी'' (हजरे असवद से पहले

वाले कोने) पर पहुंचें और मुम्किन हो तो उसको सिर्फ़ हाथ से छू लें मगर चूमें न, और अगर छूना सम्भव न हो तो बिना इशारा किए हुए गुज़र जायें, रुकने यमानी और हजरे असवद के बीच

﴿رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾

**''रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया हसन - तौं व फ़िलआख़िरति हसनतौं वक़िना अज़ाबन्नार ''** पढ़ना सुन्नत है ।

हजरे असवद के सामने पहुंचने पर एक चक्कर पूरा हो गया, दूसरे चक्कर के लिए फिर हजरे असवद के सामने ही से بسم الله الله اكبر (बिस्मिल्लाह अल्लाहु

अक्बर) कहते हुए उसे बोसा दें वर्ना हाथ से इशारा करके तवाफ़ का दूसरा चक्कर शुरू कर दें , इसी तरह सात चक्कर पूरा करें ।

**रमल व इज़्तेबाअ़ : तवाफ़े** कुदूम (मक्का पहुंचने के बाद पहले तवाफ़) में मर्दों के लिए रमल व इज़्तेबाअ़ मसनून है, औरतों के लिए नहीं, यह बात ध्यान में रहे कि रमल सिर्फ़ शुरू के तीन चक्करों में और इज़्तेबाअ़ पूरे तवाफ़ में करना चाहिए ।

रमल का मतलब है छोटे छोटे क़दम उठा कर थोड़ा तेज़ चलना और इज़्तेबाअ़ का मतलब है एहराम की ओढ़ने वाली चादर के दाहिने हिस्सा को दायें हाथ के बग़ल के नीचे से निकाल कर बायें कंधे पर ऐसे डाल

लेना कि दाहिना कंधा बिल्कुल खुल जाये ।

तवाफ़ के लिए वजू करना शर्त है वजू के बिना तवाफ़ सही नहीं होगा, तवाफ़ के आदाब में से यह भी है कि तवाफ़ के बीच तवाफ़ करने वाले के दिल में अल्लाह का डर बराबर रहे, बिना ज़रूरत किसी से बात न करें, तवाफ़ करते वक़्त ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह से दुआ़ करें, कुरआन पढ़ें और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहिवसस्लम पर दरूद भेजें, यह बात याद रहे कि तवाफ़ के लिए कोई ख़ास दुआ़ साबित नहीं है ।

## (५) दो रकाअ़त नफ़िल

तवाफ़ कर लेने के बाद यदि आसानी से मक़ामे इब्राहीम के पास दो रकाअ़त

नमाज़ पढ़ना सम्भव हो तो वहां वरना मताफ़ या हरम शरीफ़ के किसी भी हिस्सा में दो रकाअ़त नफ़िल अदा करें, पहली रकाअ़त में सूरह फ़ातिहा(अलहमदो......) के बाद सूरह काफ़िरून और दूसरी रकाअ़त में सूरह फातिहा के साथ सूरह इख़्लास (कुल हुवल्लाहु अहद........) पढ़ना मसनून है ।

## (६) ज़मज़म का पानी पीना

दो रकाअ़त नफ़िल नमाज़ पढ़ लेने के बाद ज़मज़म का पानी पीना और उसे अपने सिर पर डालना मसनून है, हदीस में है कि ज़मज़म का पानी जिस इरादे से पिया जाये वह पूरा होता है, इसलिए ज़मज़म का पानी पीने से पहले जो दुआ़ करना चाहें करें ।

**नोटः-** हरम शरीफ़ के अन्दर जगह जगह ज़मज़म का पानी वाटर कूलरों में बड़ी मात्रा में उपलब्ध रहता है, ज़मज़म का कुआं हिफ़ाज़त के उद्देश से बन्द कर दिया गया है, इसलिए ज़मज़म का पानी हरम के अन्दर या बाहर कहीं से भी लिया जा सकता है ।

## (७) सफ़ा और मर्वा के बीच सई

इन तमामा कामों से फ़ारिग़ होने के बाद सई (दौड़) के लिए सफ़ा पहाड़ की ओर यह आयत पढ़ते हुए जायें:

﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ﴾

**(इन्नस्सफ़ा वलमरवता मिन शआ-**

**इरिल्लाहि, फ़मन हज्जलबैता अविअ़तमरा फ़ला जुनाहा अ़लैहि अय्यँत्तव्वफ़ा बिहिमा व मन ततव्वआ़ ख़ैरन फ़इन्नल्लाहा शाकिरुन अ़लीम)**

फ़िर सफ़ा पहाड़ पर चढ़कर उस जगह पहुंचें जहां से ख़ान-ए-काबा नज़र आ जाये, वहां खान-ए-काबा की तरफ़ चेहरा करके तीन दफ़ा الله اكبر (**अल्लाहु अक्बर**) कहें, फिर इन शब्दों में अल्लाह की तौहीद का इक़रार करें:

"لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، اَنْجَزَ وَعْدَهٗ، وَنَصَرَ

عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهُ" -

**(लाइलाहा इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरीका लहू, लहुलमुलकु व लहुलहमदु, युहई व युमीतु वहुवा अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर, लाइलाहा इल्लल्लाहु वहदहू लाशरीका लहू, अनजज़ा वअ़दहू, व नसरा अ़ब्दहू व हज़मल अहज़ाबा वहदहू)** ऊपर लिखी गई दुआ़ओं का तीन बार दोहराना मसनून है, फ़िर हाथ उठा कर जो दुआ़ करना चाहें करें, उसके बाद मर्वा पहाड़ की ओर सामान्य गति से चल पड़ें, सफ़ा व मर्वा के बीच जहां हरी बत्तियां दिखाई दें वहां मर्दों के लिए तेज़ चलना मसनून है मगर औरतें वहां भी सामान्य चाल

से ही चलेंगी, मर्वा पहुंचकर उसकी ऊंचाई पर जायें और ख़ान-ए-काबा की तरफ़ चेहरा करके वही दुआऐं जो सफ़ा पहाड़ी पर पढ़ी थीं उन्हें तीन बार पढ़ें तथा दुआ करें, और फिर दूसरा चक्कर मर्वा से शुरू करके सफ़ा पर ख़त्म कर दें, और हरी बत्तियों के बीच मर्द लोग दौड़ लगायेंगे और औरतें सामान्य चाल से चलेंगी, फिर सफ़ा पहुंचकर उसकी ऊंचाई तक चढ़ जायें और पहली बार क़िबला की तरफ़ मुंह करके जो दुआयें पढ़ी थीं उन्हें पढ़ें और तीसरा चक्कर शुरू करदें, इस तरह सफ़ा से मर्वा और मर्वा से सफ़ा के बीच चलकर सात चक्कर पूरा करें, सातवां चक्कर मर्वा पर ख़त्म होगा, इसी

काम को ''सई'' कहा जाता है ।

**नोटः-** सई में बावजू रहना अफ़ज़ल और अच्छा है पर नमाज़ या तवाफ़ की तरह शर्त नहीं है, इसलिए अगर किसी का वजू सई के बीच टूट जाये तो कोई हर्ज की बात नहीं है, उसका सई सही होगा।

## (८) हल्क़ या तक़्सीर

### (सर के बालों का छोटा कराना या मुंडवाना)

सई कर लेने के बाद मर्द लोग अपने सर के बाल मुडवालें या छोटा करा लें जबकि औरतें अपने बालों के हर जूड़े से उंग्ली के एक पोर के बराबर बाल कटवा लें, मर्दों के लिए सर के कुछ बालों का काटना और बाक़ी को छोड़ देना सुन्नत के ख़िलाफ़ है ।

इस तरह उमरः पूरा हो गया, और एहराम की पाबंदियां ख़त्म हो गईं, अब अपने ठहरने की जगह जाकर एहराम की चादरें उतार कर अपना सिला हुवा कपड़ा पहन लें ।

# हज्ज का मुख़्तसर तरीक़ा

हज्ज के पांच या छ दिन हैं जिन में हाजी को विभिन्न कार्य करने होते हैं, हज्ज के इन दिनों में किये जाने वाले काम, आदाब व तरीक़े सही अहादीस की रोशनी में प्रति दिन के हिसाब से लिखे जा रहे हैं ।

## पहला दिन 8 ज़िल्हिज्जा (तरविया का दिन)

☆ फज्र की नमाज़ के बाद हज्ज के एहराम के लिए नहालें तथा मर्द हाजी जिस्म पर खुश्बू भी मल लें यह काम मसनून हैं ।

☆ नहाने के बाद एहराम की एक चादर पहन और दूसरी ओढ़ लें, औरतें

अपना साधारण कपड़ा ही पहनेंगी ।

☆ दिन निकलने के बाद अपने ठहरने की जगह पर ही दिलमें हज्ज की नीय्यत कर के जुबान से "لَبَّیْکَ حَجًّا" (लब्बैका हज्जन) कहें और हज्ज के लिए एहराम बांध लें और तलबियहः

"لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ، لَبَّیْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ، لَا شَرِیْکَ لَکَ"

**( लब्बैका अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैका लाशरीका लका लब्बैक, इन्न-लहमदा वन्निअ़मता लका वलमुल्क, ला शरीका लक,)** पुकारना शुरू कर दें । अब आपने हज्ज का एहराम बांध लिया

और एहराम की पाबन्दियां( जिनका ब्यान उमरः के एहराम में हो चुका है) ज़रूरी हो गईं, इसके बाद अपने ठहरने की जगह से निकल कर सूरज ढलने से पहले मिना में अपने ख़ेमा के अन्दर पहुंचजायें, मुअ़ल्लिम अपनी सुविधा के लिए हाजियों को रात ही में मिना लेजाने का प्रयास करेंगे, आप उनको नम्रता से समझा कर टाल दें कि फज्र के बाद ही मिना जाना मसनून है इसलिए आप हमें सुबह ही ले जायें, और अगर वह आप को रात ही में चलने पर मजबूर करें तो एसी स्थिति में रात को जाने में कोई बात नहीं है ।

☆ मिना में अपने ख़ेमा के अन्दर

पहुंचने के बाद वहां मस्जिद-ए-ख़ैफ या अपने ख़ेमा ही में ज़ोहर, असर, मग़रिब, इशा और फज्र की नमाज़ें जमाअ़त के साथ अदा करें, ज़ोहर, असर, इशा की नमाज़ें क़स्र के साथ दो दो रकाअ़त पढ़ें, बाकी मग़रिब की नमाज़ तीन और फज्र की दो ही रकाअ़तें पढ़ी जायेंगी, मिना में ठहरने के समय ज़्यादा से ज़्यादा तलबिया पुकारते रहें, ज़िक्र व दुआ़ और तिलावत में व्यस्त रहें और ९ ज़िल्हिज्जा की रात मिना में गुज़ारें।

## दूसरा दिन 9 ज़िल्हिज्जा

## ( यौम-ए-अरफ़ा )

९ ज़िल्हिज्जा को सुबह सूरज निकलने के बाद अरफ़ा की ओर चलदें, सूरज ढलने

से पहले अरफ़ा पहुंचकर अपने ख़ेमा के अन्दर या मस्जिद-ए-नमरा में रुक जायें और सूरज ढलने के बाद ज़ोहर और असर की नमाज़ें क़स्र के साथ दो दो रकाअ़तें ज़ोहर ही के अव्वल समय में एक अज़ान और दो इक़ामत के साथ जमाअ़त से पढ़ें, और अगर मस्जिद-ए-नमरा में ठहरे हैं तो एमाम का खुतबा भी सुनें ।

☆ नमाज़ से फ़ारिग़ हाने के बाद ज़िक्र व अज़कार करें और पूरे मन से क़िबला की ओर मुंह करके रोएं, गिड़गिड़ायें और ज़्यादा से ज़्यादा दुआ़यें करें और तलबिया भी पुकारते रहें तथा कुरआन की तिलावत भी करें, अरफ़ा के मैदान में इन दुआ़ओं का ज़्यादा

से ज़्यादा पढ़ना मसनून है :

" لا اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لا شَرِیْکَ لَہٗ، لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیٍٔ قَدِیْرٌ "

**( लाइलाहा इल्लल्लाहू, वहदहू ला शरीका लहू, लहुलमुल्कू व लहुल हमदू, वहुवा अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर )**

"سُبْحَانَ اللّٰہِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ، وَلا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ"

**(सुबहानल्लाहि वलहमदुलिल्लाहि, वलाइलाहा इल्लल्लाहू, वल्लाहु अक्बर)**

"سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ"

**(सुबहानल्लाहि व बिहमदिही, सुबहानल्लाहिल अज़ीम)**

"لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحٰنَکَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ.

(लाइलाहा इल्ला अन्ता, सुब-हानका इन्नी कुन्तु मिनज्ज़ालिमीन)

"لا حَوْلَ وَلا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ."

(लाहौला वला कुव्वता इल्ला-बिल्लाहि )

﴿رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾

(रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया हसनतौं वफ़िल आख़िरति हसनतौं वक़िना अज़ाबन्नार )

आज अरफ़ा का दिन है और मैदान–ए–अरफ़ा में ठहरना हज्ज की रूह है इसके बिना हज्ज नहीं होगा, इस दिन की बड़ी फ़ज़ीलत है, अल्लाह तआला इस दिन

बन्दों की दुआऐं सुनता और कुबूल फ़रमाता है और बड़ी संख्या में अपने बन्दों को जहन्नम से आज़ाद करता है ।

अतः अपने, अपने माता पिता, मित्रों, परिवार, और रिश्तेदारों की दुनियां व आख़िरत की भलाई के लिए ख़ूब दुआ करना चाहिये, दुआ से पहले अल्लाह की तारीफ़ के साथ नबी-ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजना मसनून और दुआ की कुबूलियत के लिये सहायक है, याद रहे कि अलग अलग दुआ ही मसनून है इजतेमाई (सामूहिक) दुआ का चूंकी कोई सबूत नहीं इसलिए इससे बचना चाहिए ।

☆ हाजी के लिए अरफ़ा के मैदान में

सूरज डूबने तक रूके रहना ज़रूरी है, मोअ़ल्लिम के आदमियों के उल्टा सीधा समझाने के बावजूद हाजी साहेबान को सूरज डूबने से पहले अरफ़ा के मैदान से नहीं निकलना चाहिए, यह कार्य ख़िलाफ़े सुन्नत है।

**नोटः-** (१) दुआ़ के वक़्त क़िब्ला की ओर मुंह करना मसनून है न कि जबले रहमत को सामने करना, जैसा कि कुछ हाजियों को देखा जाता है ।

(२) जबले रहमत पर चढ़ने की न तो कोई फ़ज़ीलत है और न ही कोई सवाब, अलबत्ता अगर आसानी के साथ जबले रहमत के पास खड़े होकर दुआ़ का मौक़ा मिल जाये तो मसनून है ।

# मुज़दलफ़ा को रवानगी

९ ज़िल्हिज्जा को सूरज डूबने के बाद मग़िरब की नमाज़ अदा किये बिना अरफ़ा से मुज़दलफ़ा की ओर सुकून व इतमिनान के साथ जायें ।

☆ मुज़दलफ़ा पहुंचकर एक अज़ान और दो इक़ामत के साथ मग़िरब और इशा की नमाज़ें एक साथ पढ़ें, मग़िरब की तीन रकाअ़त और इशा की क़स्र के साथ दो रकाअ़त अदा करें,वित्र की नमाज़ भी पढ़ें, अगर आधी रात तक मुज़दलफ़ा पहुंचना संभव न हो तो रास्ता ही में यह नमाज़ें अदा कर लेनी चाहिए ।

☆ नमाज़ से फ़ारिग़ होकर कुछ खा

पी कर आराम करें और सो जायें, मुज़दलफ़ा में सिवाए सोने और आराम के कोई भी अ़मल साबित नहीं है । इसलिए ज़िक्र व अज़्कार के बजाए यह रात आराम में गुज़ारें और सुबह को फज्र के वक़्त जाग जायें, यही सुननत से साबित है ।

## तीसरा दिन 10 ज़िल्हिज्जा (कुरबानी का दिन)

☆ फज्र की नमाज़ मुज़दलफ़ा ही में अव्वल वक़्त पर जमाअ़त के साथ अदाकरें।

☆ नमाज़ से फ़ारिग़ होकर क़िबला की तरफ मुंह कर के 'मश्अ़रे हराम' के पास हाथ उठा कर खूब रोशनी होजाने तक तकबीर व तहलील (الله اكبر، لا الـه الاالله)

कहने में व्यस्त रहें, यह कार्य अफज़ल और मसनून है ।

☆ सूरज निकलने से पहले तलबियह पुकारते हुए मुज़दलफ़ा से मिना की तरफ़ रवाना हों, अलबत्ता 'वादिए मुहस्सर' पहुंचने पर जलदी से गुज़र जायें ।

## मिना में 10 जिल्हिज्जा के काम

**1**— बेहतर है कि मिना पहुंचकर सीधे अपने ख़ेमा में जायें और वहां सामान वग़ैरह रखकर सबसे पहले जम्र-ए-अक़बा पहुंचें और तलबिया बंद करदें, फिर मिना को अपने दाहिने और खान-ए-काबा को अपने बायें कर के जम्र-ए-अक़बा को सात कंकरियां मारें, कंकरियां मारते वक़्त हर बार

हाथ उठा कर الله اكبر (**अल्लाहु अक्बर**) कहें, जम्र-ए-अक़्बा को कंकरी मारने का वक़्त सूरज ढलने से पहले है लेकिन अगर किसी वजह से उस वक़्त कंकरी न मार सकें तो सूरज ढलने के बाद भी मार सकते हैं ।

**2**— जम्र-ए-अक़्बा को कंकरी मारने के बाद कुरबानी करें ।

**3**— कुरबानी के बाद मर्द अपने सर के बालों को मुंडवायें या छोटा करवायें लेकिन मुंडवाना अफ़ज़ल है, महिलायें अपने हर जूड़े से उंगली के एक पोर के बराबर बाल कटवायें।

**नोटः-** इन तीनों कार्यों के बाद हाजी एक तरह से एहराम की पाबंदियों से आज़ाद

हो जाता है और सिवाये पत्नी से सम्बंध बनाने के दूसरी वह तमाम चीज़ें जो एहराम के कारण इसके लिए मना थीं हलाल हो जाती हैं, इसलिए अब इसे एहराम उतार कर सिले कपड़े पहन लेना चाहिये ।

**4**– इस दिन का चौथा कार्य तवाफ़े - इफ़ाज़ा है, यह हज्ज का रुक्न है इसके बिना हज्ज सही नहीं होगा, इसलिए हाजी नहा धोकर सिले कपड़े पहन कर और खुश्बू लगा कर मक्का जायें और ख़ान-ए-काबा का तवाफ़ सात बार इसी प्रकार से करें जिस का ज़िक्र उमरः के तवाफ़ के सम्बंध में किया गया है । लेकिन इस तवाफ़ में इज़्तेबाअ़ और रमल न करें, यह दोनों कार्य केवल

तवाफ़-ए कुदूम में मसनून हैं ।

**नोटः-** १- अगर भीड़ भाड़ या किसी भी कारण से कोई हाजी तवाफ़े इफ़ाज़ा १० ज़िल्हिज्जा को न कर सके तो पूरे अय्यामे तशरीक़ (११,१२ व १३ ज़िल्हिज्जा) में बल्कि इस के बाद भी वह तवाफ़े इफ़ाज़ा कर सकता है, लेकिन यह ख़्याल रहे कि तवाफ़े इफ़ाज़ा के बिना हाजी पूरे तौर से हलाल न होगा और इस के लिए पत्नी से सम्बंध तवाफ़े इफ़ाज़ा के बाद ही जायज़ होगा ।

२- यौमुन्नहर (१० ज़िल्हिज्जा) के इन कामों में अगर कोई काम आगे या पीछे हो जाए तो कोई बात नहीं ।

३- तवाफ़े इफ़ाज़ा के बाद हज्जे-

तमत्तुअ़ (تمتع) और हज्जे इफ़राद करने वाले तथा हज्जे क़ेरान करने वाले वह हाजी लोग जिन्हों ने तवाफ़े कुदूम के साथ सई न की हो तो सफ़ा और मर्वा के बीच इन सब को सई उसी तरीक़ा के मुताबिक़ करनी चाहिये जिसका ज़िक्र उमरः के सई के सम्बन्ध में हुआ है ।

इन कार्यों के करने के बाद हाजी फिर मिना वापस आ जायें और रात मिना ही में बितायें।

## हज के ४,५ और ६ वें दिन

### (अय्यामे तशरीक़ यानी ११, १२, १३ ज़िल्हिज्जा)

☆ अय्यामे तशरीक़ की सारी रातों या कम से कम ११ व १२ ज़िल्हिज्जा की रातों

का अधिक्तर भाग मिना ही में बिताना ज़रूरी है ।

☆ इन तीनों दिनों में सूरज ढलने के बाद तीनों जमरात को बारी बारी एक एक करके सात सात कंकरियां मारनी हैं, पहले छोटे जमरा को फिर बीच वाले को, उसके बाद बड़े जमरा को, छोटे और बीच वाले जमरात को कंकरियां मारने के बाद थोड़ा सा हट कर, क़िबला की ओर मुंह करके हाथ उठा कर दुआ़ करना मसनून है । मगर बड़े जमरा के पास दुआ़ का सबूत नहीं है ।

**नोटः-** १- यदि कोई हाजी १२ ज़िल्हिज्जा को कंकरियां मार कर सूरज डूबने से पहले मिना क्षेत्र से बाहर निकल आये तो

जायज़ है, लेकिन अगर मिना के क्षेत्र में रहते हुए सूरज डूब जाये और वह न निकल पाये तो अब ऐसा हाजी रात भी मिना में गुज़ारेगा और अगले दिन १३ ज़िल्हिज्जा को सूरज ढलने के बाद तीनों जमरात को कंकरियां मार कर ही मिना से वापस होगा ।

२- कंकरियां कहीं से भी चुनी जा सकती हैं, इन्हें मुज़दलफ़ा से चुन्ना ज़रूरी नहीं, कंकरियां चना या मटर के दानों के बराबर या इन से कुछ छोटी बड़ी होनी चाहिये, कंकरियों का धोना ख़िलाफ़े सुन्नत है ।

३- अय्यामे तश्रीक़ में मिना में ठहरने के दौरान चार रकाअ़त वाली नमाज़ें क़स्र के साथ दो दो रकाअ़तें ही पढ़ी जायेंगी ।

# तवाफ़े विदाअ़

हज्ज से फ़राग़त के बाद जब देश वापसी या मदीना तय्यबा के सफ़र का वक़्त बिल्कुल क़रीब आजाये तो हरम शरीफ़ जाकर ख़ान-ए-काबा का अलविदाई तवाफ़ करें, यह तवाफ़ हज्ज के वाजिबात में से है ।

# मक्का मुकर्रमा में ठहरने के आदाब

हज्ज से पहले या हज्ज के बाद जितने दिन भी मक्का मुकर्रमा में रहें इस पवित्र सरज़मीन के मान व सम्मान का पूरा ख़्याल रखते हुए निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखें ।

(१) मस्जिद-ए-हराम में पंजवक़्ता नमाज़ों के पढ़ने की पाबन्दी करें, क्योंकि

यहां एक नमाज़ का सवाब एक लाख नमाज़ के बराबर दिया जाता है ।

(२) हिम्मत के अनुसार ज़्यादा से ज़्यादा खाना-ए-काबा का तवाफ़ करें कि यह ऐसी इबादत है जो इस पवित्र धर्ती के अतिरिक्त और कहीं नहीं की जा सकती है, और इसकी बड़ी फ़ज़ीलत हदीस में आई है।

(३) मस्जिद-ए-हराम में अपना अधिक समय गुज़ारें, और ज़िक्र व अज़कार तोबा व इस्तिग़फ़ार और कुरआन की तिलावत में हरदम व्यस्त रहें ।

(४) इस पवित्र सरज़मीन पर गाली गुलूज से बचें, झूट न बोलें, आपस में सभा बना कर एक दूसरे की ग़ीबत न करें न

चुग़ली खायें ।

(५) अपने किसी साथी को शरीअ़त के ख़िलाफ़ काम करते हुए देखें तो उसे नर्मी से समझा दें ।

(६) अपने सफ़र के साथियों और दूसरे लोगों के साथ अच्छा व्योहार करें, दूसरों की सेवा करते रहें, किसी को मान्सिक अथवा जिस्मानी तकलीफ़ न पहुंचायें, अगर किसी को तकलीफ़ पहुंच जाये तो उस व्यक्ति से मआ़फ़ी मांगें, किसी दूसरे से आपको अगर तकलीफ़ पहुंचे तो आप उसे मआ़फ़ कर दें ।

(७) हज्ज व ज़्यारत का यह सफ़र इबादत के मक़्सद से है इसे सैर सपाटा न

समझें, इबादात की फोटो न बनायें इस से आपका खुलूस प्रभावित होगा और दिखावे की वजह से हज्ज के सवाब से महरूम होने का ख़तरा है ।

(८) हज्ज व उमरः से सम्बन्धित यदि कोई बात न समझ में आए तो बे रोक टोक आलिमों से पूछें । और दीनी विषय में अधिक जानकारी से फ़ायदा उठाने के लिए उनकी दीनी सभाओं में शरीक हुआ करें । हरम शरीफ़ में कई मक़ामात खुसूसन "बाबुल उमरः" पर उर्दू ज़बान में बयानात व दुरूस होते हैं इन में शरीक होकर फ़ायदा उठायें ।

(९) मिना में अगर आपके ख़ेमा के

अन्दर भरोसेमन्द आ़लिम हों तो इनकी दीनी सभाओं में शिर्कत करें ।

(१०) देखा जाता है कि अधिक्तर हाजी मस्जिद-ए-आयशा से एहराम बांध कर रोज़ाना उमरः करते हैं, इनका यह कार्य सुन्नत के ख़िलाफ है, हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रजि.अ. जो हैज़ (माहवारी खून) के कारण उमरः से महरूम हो गई थीं उन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाद में हरम के छेत्र से बाहर 'तनईम' से एहराम बांध कर उमरः का आदेश दिया था, यह आदेश आ़म न था, इसलिए जिस महिला को हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रजि.अ. वाली समस्या आजाये तो उन्के लिए वहां से उमरः

का एहराम बांधने की इजाज़त है, मगर दूसरों के लिए वहां से एहराम बांधकर बार बार उमरः करना ठीक नहीं है ।

(११) मक्का मुकर्रमा में मक़बरतुल-मुअ़ल्ला, ग़ारे सौर, ग़ारे हिरा, जबले नूर और मस्जिद-ए-आयशा आदि एतिहासिक स्थान हैं, केवल इन्हें देखने के लिए तो जाया जासकता है मगर इन्की ज़ियारत की कोई फ़ज़ीलत साबित नहीं है, इसलिए इन मक़ामात पर सवाब की नीय्यत से नहीं जाना चाहिए ।

## मस्जिद-ए-नबवी की ज़ियारत के आदाब

मदीना तय्यबा का सफ़र और मस्जिद-ए-नबवी की ज़ियारत मसनून है, मगर इसका हज्ज से कोई संबन्ध नहीं है, इसलिए अगर कोई हाजी किसी कारण से मस्जिद-ए-नबवी की ज़ियारत न कर सके तो उसके हज्ज में कोई कमी नहीं आयेगी और उसका हज्ज पूरा होगा, अलबत्ता हज्ज के सफ़र में मदीना तय्यबा की ज़ियारत को शामिल रखना ही उचित है ।

☆ मदीना तय्यबा के बड़े फ़ज़ायल हैं, यह दूसरा हरम है इसके फ़ज़ायल के संबन्ध

में अनेक हदीसें हैं, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ़ फ़रमाई कि ‘‘ऐ अल्लाह! मदीना की मुहब्बत मेरे दिल में ऐसे डाल दे जैसे मक्का की मुहब्बत है या उस से अधिक’’, मस्जिद-ए-नबवी में एक नमाज़ का सवाब मस्जिद-ए-हराम (मक्का) को छोड़ कर अन्य मस्जिदों के मुक़ाबला एक हज़ार के बराबर है ।

☆ मदीना तय्यबा जाते हुए रास्ते में ज़्यादा से ज़्यादा दरूद शरीफ़ पढ़ें

‘‘اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ،اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ

عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰی آلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ-"

(अल्लाहुम्मा सल्ले अ़ला मुहम्मदिंव वअ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अ़ला इबराहीमा व अ़ला आलि इबराहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद, अल्लाहुम्मा बारिक अ़ला मुहम्मदिंव वअ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्ता अ़ला इबराहीमा व अ़ला आलि इबराहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद)

☆ मदीना तय्यबा पहुंचकर नहा लें और बदन व कपड़ों पर खुशबू आदि लगा कर मस्जिद-ए-नबवी की ओर चलदें, किसी भी दरवाज़ा से मस्जिद में दाख़िल होते समय

" بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلَاۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی

رَسُوْلِ اللّٰہِ، اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ"

**(बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाह, अल्लाहुम्मफतहली अब्वाबा रहमतिका)** पढ़ते हुए दाहिना पैर अन्दर रखें और दो रकाअ़त तहिय्यतुल-मस्जिद **रौज़तुम्मिन रियाज़िल जन्नह** में यदि सम्भव हो तो वहीं पढ़ें वर्ना मस्जिद-ए-नबवी में कहीं भी पढ़ लें ।

☆ तहिय्यतुल मस्जिद से फ़ारिग़ होने के बाद यदि किसी फर्ज़ नमाज़ का समय है तो उसे बा जमाअ़त अदा करें फिर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र के सामने सम्मान पुर्वक खड़े होकर धीमी

आवाज़ से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन अलफाज़ में सलाम अर्ज़ करें:

"اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَ بَرَکَاتُہٗ"

**(अस्सलामु अ़लैका याअय्यु-हन्नबिय्यो व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू )**

उसके बाद दरूद शरीफ़ पढ़ें ।

☆ फिर थोड़ा सा दाहिने ओर बढ़कर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रजिअल्लाहु अ़न्हु पर इन अलफ़ाज़ में सलाम भेजें और उनके हक़ में दुआ़ करें:

"اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا اَبَا بَکْرِ الصِّدِّیْقُ وَ رَحْمَةُ اللّٰہِ وَ بَرَکَاتُہٗ، جَزَاکَ اللّٰہُ عَنْ اُمَّةِ رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ خَیْرًا"

**(अस्सलामुअ़लैका या अबाबक्रिनिस्सिद्दीक! व रहमतुल्लाहि वबरकातुहू, जज़ाकल्लाहु अ़न उम्मति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लमा खै़रा)**

फिर थोड़ा और दाहिने होकर हज़रत उमर फारूक़ रज़िअल्लाहु अन्हु पर इन शब्दों में सलाम भेजें और उनके लिए दुआ़ करें:

"اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا عُمَرُ الْفَارُوْقُ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ، جَزَاکَ اللّٰهُ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ ﷺ خَيْرًا"۔

**(अस्सलामुअ़लैका या उमरुल फ़ारूक़ो व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू, जज़ाकल्लाहु अ़न उम्मति मोहम्मदिन**

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा खै़रा)

☆ क़ब्र की जालियों को छूना, चूमना वहां ज़ोर ज़ोर से रोना चिल्लाना, क़ब्र में परचियां फेंकना तथा क़ब्र वालों से किसी चीज़ का सवाल करना अथवा इन क़ब्रों के पास या उनकी ओर चेहरा करके दुआ़ करना जायज़ नहीं है । अतः इनसे बचना चाहिये ।

☆ मदीना तय्यबा में ठहरने के समय मस्जिद-ए-नबवी में बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की कोशिश करनी चाहिये ।

☆ मदीना तय्यबा में ठहरने के वक़्त में ज़्यादा से ज़्यादा दरूद पढ़ें ।

☆ मस्जिद-ए-कुबा की ज़ियारत और

उसमें दो रकाअ़त नफ़िल नमाज़ की बड़ी फ़ज़ीलत है, इसलिए मस्जिद-ए-कुबा की ज़ियारत करें और वहां पर दो रकाअ़त नमाज़ पढ़ें ।

☆ मदीना में बक़ीअ़ क़ब्रिस्तान और उहुद के शहीदों की क़ब्रों की ज़ियारत मसनून है, लेकिन इन स्थानों पर क़ब्र वालों से सवाल करना, इन से मदद मांगना, रोना चिल्लाना और ख़ाके शिफा लाना जायज़ नहीं है ।

☆ मस्जिद-ए-नबवी, नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके दोनों खुलफ़ा हज़रत अबू बक्र व उमर रजि.अ. की क़ब्रों, मस्जिद-ए-कुबा, बक़ीअ़ ग़रक़द क़ब्रिस्तान और शोहदाये उहुद की क़ब्रों के

अतिरिक्त किसी और स्थान की ज़ियारत सवाब की नीय्यत से करना सही नहीं है, इसलिए अगर कोई मदीना के एतिहासिक स्थानों को देखना चाहे और इस पर सवाब का इरादा न हो तो कोई हर्ज नहीं है ।

# कुरआन व हदीस की दुआऐं

## (अरबी व हिन्दी में)

﴿رَبَّنَا ظَلَمْنَآ أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ﴾

(रब्बना ज़लमना अन्फुसना व इल्लम तग़फ़िरलना व तरहमना लनकूनन्ना मिनलख़ासिरीन)

﴿رَبِّ اجْعَلْنِى مُقِيمَ الصَّلٰوةِ وَمِن ذُرِّيَّتِى رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ﴾

(रब्बिजअ़लनी मुक़ीमस्सलाति व मिन जुर्रिय्यती रब्बना व तक़ब्बल दुआ़ए)

﴿رَبَّنَا اغْفِرْ لِى وَلِوٰلِدَىَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ﴾

(रब्बनग़्फ़िरली वलिवालिदय्या व लिल्मोमिनीना यौमा यक़ूमुलहिसाब)

﴿لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحٰنَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ﴾

(ला इलाहा इल्ला अन्ता सुबहा-नका इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन)

﴿رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ﴾

(रब्बिग़्फ़िर वरहम व अन्ता ख़ैरुर-राहिमीन)

﴿رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾

(रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया हसनतौं व फ़िल आख़िरति हसनतौं वक़िना

अज़ाबन्नार)

﴿رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِنْ نَّسِيْنَآ أَوْ أَخْطَأْنَا، رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا، رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَالَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ، وَاعْفُ عَنَّا، وَاغْفِرْلَنَا، وَارْحَمْنَآ، أَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ﴾

(रब्बना ला तुआख़िज़ना इन्नसीना अव अख़तअना, रब्बना वला तहमिल अ़लैना इसरन कमा हमलतहु अ़लल्ल-ज़ीना मिन क़बलिना, रब्बना वला तुह-म्मिल्ना माला ताक़ता लना बिह, वाफुअ़न्ना, वग़फ़िरलना, वरहमना अन्ता मौलाना फ़न्सुरना अ़लल्क़ौमिल

काफ़िरीन)

﴿رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ إِمَامًا﴾

(रब्बना हबलना मिनअज़्वाजिना व जुर्रीय्यातिना कुर्रता अअ़युनिंव्वजअ़लना लिलमुत्तक़ीना इमामा)

﴿رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ﴾

(रब्बना ला तजअ़लना मअ़लक़ौ - मिज़्ज़ालिमीन)

﴿حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم﴾

(हस्बियल्लाहु लाइलाहा इल्ला हुवा, अ़लैहि तवक्कलतु वहुवा रब्बुल अ़रशिल अ़ज़ीम।

﴿اَللّٰھُمَّ إِنِّی أَعُوْذُبِکَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْکَسَلِ، وَالْجُبْنِ، وَالْھَرَمِ، وَالْبُخْلِ، وَأَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ فِتْنَةِالْمَحْیَا وَالْمَمَاتِ﴾

(अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिनलअ़जज़ि वलकसलि, वलजुबनि, वलहरमि, वलबुख़्लि व अऊज़ुबिका मिन अ़ज़ाबिल क़ब्रि व मिन फ़ितनतिल महया वल ममात)

﴿اَللّٰھُمَّ إِنِّیَ أَعُوْذُ بِکَ مِنْ جَھْدِ الْبَلَاءِ، وَدَرَکِ الشَّقَاءِ، وَسُوْءِ الْقَضَاءِ، وَشَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ﴾

(अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिन जहदिल बलाइ, व दरकिश्शक़ाइ,

वसूइलक़ज़ाइ, व शमाततिल अअ़दाइ)

﴿اَللّٰهُمَّ أَصْلِحْ لِىْ دِيْنِى الَّذِى هُوَ عِصْمَةُ أَمْرِى، وَأَصْلِحْ لِى دُنْيَاىَ الَّتِى فِيهَا مَعَاشِى، وَأَصْلِحْ لِىْ آخِرَتِى الَّتِى فِيهَا مَعَادِىْ، وَاجْعَلِ الْحَيَاةَ زِيَادَةً لِّىْ فِى كُلِّ خَيْرٍ، وَاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِىْ مِنْ كُلِّ شَرٍ﴾

(अल्लाहुम्मा असलिह ली दीनी अल्लज़ी हुवा इसमतु अमरी, व असलिह ली दुनयाया अल्लती फ़ीहा मआ़शी, व असलिह ली आख़िरती अल्लती फ़ीहा मआ़दी, वज्अ़लिल हयाता ज़ियादतल्ली फ़ी कुल्लि ख़ैर, वज्अ़लिलमौता राहतल्ली मिन कुल्लि शर्र)

﴿اَللّٰهُمَّ إِنِّى أَسْأَلُكَ الْهُدٰى، وَالتُّقٰى،

وَالْعَفَافَ، وَالْغِنٰى﴾

(अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुकल-हुदा, वत्तुक़ा, वलअ़फ़ाफ़ा, वलग़िना)

﴿اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ، وَالْكَسَلِ، وَالْجُبْنِ، وَالْبُخْلِ، وَالْهَرَمِ، وَعَذَابِ الْقَبْرِ، اَللّٰهُمَّ آتِ نَفْسِيْ تَقْوَاهَا، وَزَكِّهَا أَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا، أَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ، وَمِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ، وَمِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ، وَمِنْ دَعْوَةٍ لَا يُسْتَجَابُ لَهَا﴾

(अल्लाहुम्मना इन्नी अऊ़जुबिका मिनलअ़जज़ि, वलकसलि, वलजुबनि, वलबुख़लि, वलहरमि, व अ़ज़ाबिल क़ब्रि, अल्लाहुम्मा आति नफ़सी तक़ -

वाहा, वज़क्किहा अन्ता ख़ैरु मन ज़क्काहा, अन्ता वलिय्युहा व मौलाहा, अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिन इल्मिन लायन्फ़अ़, व मिन क़ल्बिन ला यख़शअ़, व मिन नफ़्सिन ला तशबअ़, व मिन दअ़वतिन ला युसतजाबुलहा)

﴿اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِکَ، وَتَحَوُّلِ عَافِیَتِکَ، وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِکَ،وَجَمِیْعِ سَخَطِکَ﴾

(अल्लाहुम्मा इन्नी अअ़ुज़ुबिका मिन ज़वालि निअ़मतिका व तहव्वुलि आ़फ़ियतिका व फुजाअति निक़मतिका, व जमीए सख़तिका)

﴿اَللّٰھُمَّ رَحْمَتَکَ اَرْجُو، فَلَا تَکِلْنِیْ

إِلٰی نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَیْنٍ، وَأَصْلِحْ لِیْ شَأْنِیْ كُلَّهٗ، لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ

(अल्लाहुम्मा रहमतका अरजू, फ़ला तकिलनी इला नफ़सी तरफ़ता अ़ैनिन, व असलिह ली शअनी कुल्लहू, लाइलाहा इल्ला अन्ता)

اَللّٰهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوْبِ صَرِّفْ قُلُوْبَنَا عَلٰی طَاعَتِکَ

(अल्लाहुम्मा मुसर्रिफ़ल कुलूबि सर्रिफ़ कुलूबना अ़ला ताअ़तिक)

یَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلٰی دِیْنِکَ

(या मुक़ल्लिबल कुलूबि सब्बित क़ल्बी अ़ला दीनिका)

﴿اَللّٰهُمَّ إِنَّکَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ﴾

(अल्लाहुम्मा इन्नका अ़फ़ुव्वुन , करीमुन तुहिब्बुल अ़फ़्वा फ़ाअ़फ़ुअ़न्नी।

﴿اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوْذُبِکَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوْذُبِکَ مِنَ الْبُخْلِ، وَأَعُوْذُبِکَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلٰى أَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَأَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ﴾

(अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिनलजुबनि व अऊज़ुबिका मिनल - बुख़लि, व अऊज़ुबिका मिन अन अरुद्दा इला अरज़लिल्उमुरि, व अऊज़ुबिका मिन फ़ितनतिद्दुनिया व अ़ज़ाबिल क़ब्रि)

﴿اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُکَ الْجَنَّةَ وَأَسْتَجِيْرُ

بِکَ مِنَ النَّار﴾

(अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुकल जन्नता व असतजीरु बिका मिनन्नार)

﴿اَللّٰهُمَّ حَاسِبْنِي حِسَابًا يَّسِيْرًا﴾

(अल्लाहुम्मा हासिब्नी हिसाबैं-यसीरा)

﴿اَللّٰهُمَّ زِدْنَا وَ لَا تَنْقُصْنا، وَ اَكْرِمْنَا وَ لَا تُهِنَّا، وَ اَعْطِنَا وَ لَا تَحْرِمْنَا، وَ آثِرْنَا وَ لَا تُؤْثِرْ عَلَيْنَا، وَ اَرْضِنَا وَ ارْضَ عَنَّا﴾

(अल्लाहुम्मा ज़िदना वला तन्कुस्ना, व अकरिम्ना वला तुहिन्ना, व अअ़तिना वला तहरिम्ना, व आसिरना वला तुअसिर अ़लैना, व अरज़िना वरज़ा अ़न्ना)

☆☆☆☆☆

आख़िर में दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ाला तमाम हुज्जाजे केराम को सुन्नत के मुताबिक़ हज्ज की तौफ़ीक़ बख़्शे और उनके हज्ज को ''हज्जे मबरूर'' बनाकर उनकी मग़फ़िरत फ़रमाए। (आमीन)

हुज्जाजे केराम से अनुरोध है कि वह लेखक एवं प्रकाशक को अपनी दुआ़ओं में ज़रूर याद रखें।

وصلى الله على نبينا محمد
وبارک وسلم

हम तमाम हज यात्रियों को मुबारकबाद पेश करते हुऐ दुआ करते हैं कि अल्लाह उनका हज कबूल फरमाए और उन्हें खैरियत से वापस लाऐ।

**Abdul Mannan Salafi**

Published By:

JAMIAT AHLE HADEES

SIDDHARTH NAGAR